<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="hin-w-media-	H0338(a)	"	lang="hindi">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-KHS Hindi Corpora, Monolingual Written Text		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures and tables have been omitted. Samples taken from page 14,15		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Short stories	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	Charchit Kahaniyan	</title>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>	Maan-Patra	</headline>
	<author>	Ramesh Chandra Shah	</author>
	<words>	424	</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	Jagdish Bhardwaj Prakashan	</publisher>
	<pubDate>	1994	</pubDate>
</imprint>			
<idno type="CIIL code">		74110	</idno>
<index>		H0338(a)	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>	13-Jul-2005	</date>
	<inputter>	Rajeshwari.R	</inputter>
	<proof>		</proof>
</creation>			
<langUsage>		Hindi	</langUsage>
<wsdUsage>			
<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>			
</wsdUsage>			
<textClass>			
<channel mode="w">		print	</channel>
<domain type="public">			</domain>
</textClass> </profileDesc> </Header>			

<text><body>		
<p>	सोहन चचा मानो इस ललकार के लिए पहले से ही तैयार बैठे हों, इस तरह अपने चबूतरे से कूद कर बीच बाजार में खड़े हो जाते और अपनी बाईं कलाई को दाएँ हाथ की उँगलियों से बजाते हुए कहते-'तुम मुहूर्त की बात करते हो ददा! मैं तो यहाँ सुन रहा हूँ उसके कदमों की आहट को। तुमको कैसे सुनाई देगी दद्दा? तुम तो, बस धमाका ही सुनोगे...' पिताजी हौले-हौले मुस्कराते और अपने माथे को उँगली से छूते हुए बुदबुदाते-'धमाका तो...सोहनलाल, सिर्फ यहाँ होने वाला है तेरे।'	</p>
<p>	सोहन चचा तब तक वापस उछलकर अपने चबूतरे पर चढ़ जाते और कमर पर हाथ रखके वही जुमले उछाल देते-'देखते जाओ दद्दा!...आखिर मैं भी यहीं हूँ। तुम भी यहीं हो। फालतू बहस से क्या फायदा!'	</p>
<p>	मगर देखते जाने की, मुहल्ले के सब्र की आखिर कोई सीमा थी। महीने पर महीने...पूरा साल भी गुजर गया और फिर भी सोऽहं बाबा के सुभाष बोस में परिणत हो जाने की चमत्कारिक घटना की कहीं परछाईं तक नहीं दिखाई दी तो लोगों ने सोहन चचा को लताड़ना शुरु कर दिया। मगर यह देखकर लोगों के अचरज की सीमा न रही कि इस तलाड़ का भी सोहन चचा पर कोई असर ही नहीं हो रहा है। वे अब भी उसी तरह मुस्करा रहे हैं और अपनी 'मिथ' को बचाने में जरा भी दिलचस्पी नहीं दिखा रहे। कुढ़कर लोगों ने उनका नाम ही बदल दिया। अब कोई भी उन्हें उनके असली नाम से नहीं पुकारता। सब 'सोऽहं', 'सोऽहं' चिल्लाते। मगर सोहन चचा को इस पर भी कभी कोई आपत्ति नहीं हुई।	</p>
<p>	मुहल्ले को क्या पता कि सोहन चचा के भीतर-ही-भीतर कैसी उथल-पुथल चल रही है! पता तो तब चला, जब एक दिन उन्होंने अपने आराध्य के प्रति खुल्लमखुल्ला विद्रोह कर डाला।	</p>
<p>	'अजी, ये बङ्गाली क्या जानें, राजनीति कहते किसे हैं'-हमारी दूकान के सामने खड़े दो रामकृष्ण मिशन के साधुओं को देखकर सोहन चचा अचानक अपने चबूतरे से ही जाने किस अदृश्य श्रोता को सम्बोधित करते हुए चिल्लाए-'इनका कोई ठिकना है? कभी बर्लिन, कभी मास्को! अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ जो हरवा दिया उसे महात्मा ने...'	</p>
<p>	साधुओं ने चौंककर बारी-बारी से सोहन चचा की ओर घूमकर देखा और हँसने लगे। पिताजी को भी हँसी आई और उनके होंठ भी फड़फड़ाए। मगर वे बोले तभी, जब साधु लोग सामान लेकर विदा हो गए।	</p>
<p>	'यार सोहन, तू तो पहले कुछ और ही कहा करता था। त्रिपुरी का कलङ्क....और जाने क्या-क्या! भूल गया उन गालियों को? अब अचानक पलटी क्यों खा रहा है?'	</p>
<p>	सोहन चचा हमारी तरफ पीठ किए दूकान के भीतर झाड़ू लगाने में व्यस्त थे। बिना अपनी जगह से हिले-डुले वहीं से डायलॉग बोलने लगे।	</p>

</body></text>
</Doc>